श्रीगणेशायनमः ।

अथ रसराज ।

कवित्त ।

ध्यावैं सुरासुर सिद्धसमाज महेशहिं आदि महामुनी ज्ञानी । योग में यंत्र में मंत्र में तंत्र में गावैं सदा श्रुति शेष भवानी ॥ संकटभाजन आनन की द्युति सुन्दर दण्ड उदण्ड सी जानी । ध्याय सदा पद पङ्कज को मतिराम तबै रसराज बखानी ॥ १ ॥

दोहा ।

श्रीगुरुचरण मनाइ कै गणपति को उर ध्याइ ।
रसिक हेतु रसराज किय सुकविन को सुखदाइ ॥

प्रार्थना – दोहा ।

... थैं जानौं नहीं कछुक भयो सम्बोध ।
... मति जो कछुक सुकविन पढ़िहैं शोध ॥
... था नायका नायकनि रच्यो ग्रन्थ मतिराम ।
लीला राधारवन की सुन्दर यश अभिराम ॥ ४ ॥

होत नायकानायकहिं आलम्बित शृङ्गार ।
ताते बरणौं नायकानायक मति अनुसार ॥५॥
उपजत जाहि बिलोकि कै चित्त बीच रसभाव ।
ताहि बखानत नायका जे प्रवीण कबिराव ॥६॥

उदाहरण—सवैया ।

कुन्दन को रँग फीको लगै झलकै अति अंगन चारु गुराई । आंखिन में अलसानि चितौनि में मंज बिलासन की सरसाई ॥ को बिन मोल बिकात नहीं मतिराम लहे मुसकान मिठाई । ज्यों ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नयननि त्यों त्यों खरी निकरै सी निकाई ॥ ७ ॥

दोहा ।

जालरंध्र मग ह्वै कढ़ै द्युतियतन दीपतिपुंज ।
झिंझिया कैसो घट भयो दिनहीं में बन कुंज ॥
कही नायका तीन बिधि प्रथम स्वकीया
परकीया पुनि दूसरी गणिका तीजी जा

स्वकीया लक्षण—दोहा ।

लाजवती निशिदिन पगी निजपति के अनुराग ।
कहत स्वकीया शीलमय ताको पति बड़भाग ॥

उदाहरण—सवैया ।

संचि बिरंचि निकाई मनोहर लाजति मूरतिवन्त बनाई । तापर तो बड़भाग बड़े मतिराम लसैं पति प्रीति सुहाई ॥ तेरे सुशील सुभाव भटू कुल नारिन को कुलकानि सिखाई । नेहौज़नी पति देव तके गुणगौरि सबै गुणगौरि पठाई ॥ ११ ॥

दोहा ।

जानति सौति अनीति है जानति सखी सुनीति ।
गुरुजन जानति लाज है प्रीतम जानति प्रीति ॥
त्रिविधि स्वकीया जानियो प्रथमहिं मुग्धा नाम ।
मध्या पुनि प्रौढ़ा गिनो बरणत कवि मतिराम ॥
अभिनव यौवन आगमन जाके तन में होय ।
ताको मुग्धा कहत हैं कवि कोविद सब कोय ॥

उदाहरण - कवित्त ।

नेक मन्द मधुर कपोल मुसक्यान लागी नेक मन्द गमन गयन्दन की चाल भो । रंचकन ऊँचो लगी अंचल उरोजन के अंकुरनि बंक

डीठि नेक सो बिशाल भो ॥ मतिराम सुकबि रसीले कछु बैन भये बदन शृङ्गार रस बोलो आलवाल भो। बाल तन यौवन रसाल उलहत लखि सौतिन के साल भो निहाल नन्दलाल भो॥

दोहा।

अभिनव यौवन ज्योति सों जगमग होत बिलास।
तिय के तन पानिप बढ़ै पिय के नयननि प्यास॥

मुग्धा के द्वै भेद बर भाषत सुकबि सुजान ।
एक अज्ञातक यौवना ज्ञातयौवना आन॥१७॥

अज्ञातयौवना लक्षण — दोहा।

निज तनयौवन आगमन जो नहिं जानत नारि।
सो अज्ञातकयौवना कबि बरणत निरधारि ॥

उदाहरण — सवैया।

खेलत चोर-मिहीचनी आजु गई हुती पाछिले द्योस की नाईं। आली कहा कहौं एक भई मतिराम नई यह बात तहांईं ॥ एकहि भौन दुरे इक संगही अंग सों अंग छुवायो कन्हाईं। कम्प छुट्यो घन स्वेद बढ्यो तन रोम उठ्यो अँखियां भरि आईं॥ १९ ॥

दोहा ।

लाल तिहारे संग में खेलैं खेल बनाइ ।
मूंदत मेरे नयन हौ करन कपूर लगाइ ॥२०॥

ज्ञातयौवना लक्षण—दोहा ।

निज तनयौवन आगमन जानि परति है जाहि ।
कवि कोबिद सब कहत हैं ज्ञातयौवना ताहि ॥

उदाहरण--कवित्त ।

कानन लौं लागे मुसकान प्रेम पागे लोने लाल भरे लागे लोचन अनंग ते । भारु धरि भुजनि डुलावति चलति मन्द औरें ओप उलहत उरभ उतंग ते ॥ मतिराम यौवन के पवन भकोर आय बढ़ कै सरसरस तरल तरंग ते । पाविय बिमल की झलक झलकन लागी काई सी गई है लरिकाई कढ़ि अंग ते ॥ २२ ॥

दोहा ।

इते उते सचकित चितै चलत डुलावत बांह ।
दीठि बचाइ सखीन की छनकु निहारति छांह ॥

अथ नवोढ़ा लक्षण—दोहा ।

मुग्धा जो भय लाजयुत रति न चहै पति संग ।
ताहि नवोढ़ा कहत हैं जे प्रवीण रसरंग ॥२४॥

उदाहरण—कवित्त ।

साथ सखी के नई दुलही को भयो हरि को हियो हेर हिमंचल । आय गये मतिराम तहां घर जानि इकन्त अनन्द सों चंचल ॥ देखतही नन्दलाल को बाल के पूरि रहे अंसुवानि दृगंचल । बात कही न गई सु रही गहि हाथ दुहो सों सहेली को अंचल ॥ २५ ॥

दोहा ।

ज्यों ज्यों परसै लाल तन त्यों त्यों राखै गोइ ।
नवल बधू डर लाजते इन्द्रबधू सी होइ ॥२६॥

अथ बिस्रब्ध नवोढ़ा लक्षण—दोहा ।

होय नवोढ़ा के कछुक प्रीतम सों परतीति ।
सो बिस्रब्ध नवोढ़ यों बरणत कबि रसरीति ॥२७॥

उदाहरण—कबित्त ।

केलि की राति अघाने नहीं दिनही में लला पुनि घात लगाई । प्यासलगी कोउ पानी

दे जाइ यो भीतर बैठि कै बात सुनाई ॥ झेठी पठाई गई दुलही हँसि हेरे हरैं मतिराम बुलाई । कान्ह के बोल में कान न दीन्हों सुगेह की देहरी पैं धरि आई ॥ २८ ॥

दोहा ।

प्रीतम तुम्हरी सेज पै हौं आवत नन्दलाल ।
दयागहो बातन कहो दुख न दीजिये लाल ॥

अथ मध्यालचन - दोहा ।

जाकी तन में होत है लाज मनोज समान ।
तासों मध्या कहत हैं कबि मतिराम सुजान ॥

उदाहरण — कबित्त ।

चित में बिलोकतही लाल को बदन बाल जीते जेहि कोटि चन्द शरद पुनीन के । मुसक्यान अमल कपोलनि के रुचि वृन्द चमकै तखोननि के रुचिर चुनौन के ॥ प्रीतम निहाख्यो बांहन हतश्रवान कहीं जामें मतिराम मन सकल मुनीन को । गाढ़े गहो लाज मैन कएठ ह्वै फिरत बैन मूल ह्वै फिरत नैन वारि बरुनीन के॥

दोहा।

केलि भवन की देहरी खड़ी बाल छवि नौल।
कामकलित हियको लहै लाजललित हगकौल॥

अथ प्रौढ़ालच्छन--दोहा।

निजपतिसोंरतिकेलिकी सकलकलानि प्रवीन।
तासों प्रौढ़ा कहत हैं जे कवित्त रसलीन ॥३३॥

उदाहरण—सवैया।

प्राणप्रिया मनभावन संग-अनंग-तरंगनि रंग पसारे। सारी निसा मतिराम मनोहर केलि के पुंज हजार उघारे॥ होत प्रभात चल्यो चहै प्रीतम सुंदरि के हिय में दुख भारे। चन्द सों आनन दीप सी दीपति श्याम सरोज से नैन निहारे॥ ३४॥

दोहा।

लपटानी अति प्रेम सों दै उर उरज उतंग।
घरी एक लौं छुटे पर रही लगीसी अंग॥३५॥

अथ धीराभेद लच्छन—दोहा।

मध्या प्रौढ़ा मान में तीन भांति पुनि जानि।
धीरा बहुरि अधीर तिय धीराधीरा मानि॥

अथ मध्या धीरा लक्षण—दोहा।

बचनन की रचनानि सों पियहि जनावै कोप।
मध्या धीरा कहत हैं ताहि सुमति रसचोप ॥

उदाहरण—कबित्त।

तुम कहाकरो कहूं काम ते अटकि परे
तुम्हैं कौन दोष सो तो आपनो यों भाग है ।
आये मेरे भौन वड़े भोर उठि प्यारही में अति
हरवरन बनाय बांधी पाग है॥ मेरेही बियोग
रहे जागति सकल राति गात अलसात मेरो
परम सुहाग है । मनहूं को जानी प्राण प्यारे
मतिराम इह नैननहीं माहिं पाइयत अनुराग
है ॥ ३८ ॥

दोहा।

अजों उड़ावत हौ नहीं पीर न होत सभाग ।
ठौर ठौर या भौंर के डसे अधर दल दाग॥३९॥

अथ मध्याअधीरा लक्षण—दोहा।

मध्या कहिय अधीर तिय बोलै बोल कठोर ।
पियहि जनावै कोप यों बरणत कवि शिरमौर॥

उदाहरण — सवैया।

कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहौ तितही जितही मन भायो। काहे को सौंहै हजार करो तुम तौ कबहूं अपराध न ठायो॥ सो बनदीजै नदीजै हमैं दुख योंहीं कहा रसबाद बढ़ायो। मान रह्यो इनहीं मनमोहन माननी छोड़ू सो मान मनायो॥ ४१॥

दोहा।

बलय पीठि तरवन भुजन उर कुच कुंकुम छाप।
तिते जाव मनभावती जिते बिकाने आप॥४२॥

अथ मध्याधीराधीर लक्षण — दोहा।

मध्या धीराधीर तिय ताहि कहत सबकोय।
पिय सों कहि कै बचन कछु रोष जनावै रोय॥

उदाहरण — सवैया।

आजु कहा तजि बैठी हो भूषण ऐसेही अंग कछू अरसीलो। बोलत ब्रोल रुखाई लिये मतिराम सुनेते सनेह रसीलो॥ क्यों न कहौ दुख प्राणप्रिया अँसुवानि रहे भरि नैन लजीलो।

कौन तुम्हें दुख है जिनकी तुमसे मनभावन छैल छबीलो ॥ ४४ ॥

दोहा।

तुम सों कीजै मान क्यों बहुनायक मनरंज ।
बात कहत यों बाल कै भरि आये दृग कंज ॥

अथ प्रौढ़ा धीरा लक्षण—दोहा।

पिय सों प्रकट न रिस करै रतिते रहै उदास।
प्रौढ़ा धीरा जानिये सो निज सुमति बिलास॥

उदाहरण—कवित्त।

वैसिही चितै कै मेरे चित्त को चुरावती हौ बोलती हौ वैसिही मधुर मृदुबानि सों। कबि मतिराम अंक भरत मयङ्कमुखी वैसिही रहति गहि भुज लेति कानि सों॥ चूमति कपोल पान करत अधर रस वैसिही निहारी रीति सकल कलानि सों। कहा चतुराई ठानियत प्राण प्यारी तेरो मान जानियत रूखी मुख मुसक्यानि सों॥ ४७॥

दोहा।

ढोली बांहन सों मिली बोली कछू न बोल ।
सुन्दरि मान जनाइकै लियो प्राणपति मोल ॥

अथ प्रौढ़ाअधीरा लक्षण—दोहा।

डर देके पिय को प्रिया देय सुमन की मारु ।
प्रौढ़अधीरा कहत हैं ताहि सुकवि मति चारु॥

उदाहरण—कवित्त।

जाकि अंग अंग की निकाई निरखत आली वारने अनंग की निकाई कीजियतु है। कवि मतिराम जाकी चाह व्रजनारिन को देह अँसुवान के प्रवाह भीजियतु है॥ जाकि बिनु देखे न परत कल तुमहू को जाकि बैन सुनत सुधा सों पीजियतु है। ऐंसे सुकुमार पिय नन्द के कुमार को यों फूलन की मालन की मारु दीजियतु है॥ ५० ॥

दोहा।

जहां जहां सखि देत तू फूल माल की मारु ।
तहां तहां नन्दलाल के उठैं रोम तन चारु ॥

अथ प्रौढ़ाधीराधीर लक्षण – दोहा ।

रति उदास ह्वै नाह को डर दिखलावै बाम ।
प्रौढ़ाधीराधीर तिय बरणत कवि मतिराम ॥

उदाहरण—सवैया ।

पीतम आये प्रभात पिया कही राति रमे रति चिन्ह लियेहीं । बैठि रही पलँगा पर सुंदरि नयन नवाइ कै धीर धरेहीं ॥ बांह गहै मतिराम कहै न रही रिस मानिनि कै हठ कीहीं । बोली न बोल कछू सतराय पै भौहैं चढ़ाय तकी तिरछोहीं ॥ ५३ ॥

दोहा ।

आवत उठि आदर कियो बोलि बोल रसाल ।
बांह गहत नन्दलाल के भये बाल दृग लाल ॥

ज्येष्ठाकनिष्ठा लक्षण—दोहा ।

बरणत ज्येष्ठकनिष्ठिका यह द्वै व्याही नारि ।
प्रथम पियारी दूसरी घटि प्यारी निरधारि ॥ ५५ ॥

उदाहरण—कवित्त ।

बैठी एक सेज पै सलोनी मृगनयनी दोऊ

दूहि गांव बसि काहु कैसिक जीजै ॥ होत रहे मनयों मतिरांम कहूं बनजाय बड़ोतप कीजै । ह्वै बनमाल हिये लगिये अरु ह्वै मुरली अधरा रस पीजै ॥ ६० ॥

दोहा ।

कन्त चौकसीमन्त की बैठी गांठि जुराइ ।
पेखि परोसी को पिया घूंघट में मुसकाइ ॥ ६१ ॥

अनूढ़ा लक्षण—दोहा ।

अनब्याही काहु पुरुष सों अनुरागी जो होइ ।
ताहि अनूढ़ा कहत हैं कबि कोबिद सब कोइ ॥

उदाहरण—सवैया ।

गोपसुता कहै गौरि गुसाइँनि पायँ परौं बिनती सुनि लीजै । दान दयानिधि दासी के ऊपर नेकु सुचित्त दया रस भीजै ॥ देहि जो ब्याहि उछाहं सों मोहन मात पिताहु को सोम न कीजै । सुन्दर सांवरो नंदकुमार बसै उर में बरु सो बरु दीजैं ॥ ६३ ॥

दोहा ।

मैं सुनि आई नन्दघर अबतू होहु निसंक ।
राधे मोहन व्याहते जैहैं धोय कलंक ॥ ६४ ॥

परकीया और भेद—दोहा ।

परकीया के भेद द्वह गुप्त जो प्रथम बखानि ।
बहुरि बिदग्धा लच्छिता कुलटा मुदितामानि॥
और अनूसयना कही तिनके त्रिबिध बिवेक ।
बरणत कबि मतिराम यह रससिंगार को सेक॥

सुरतगुप्ता लक्षणम्—दोहा ।

सुरत छिपावै जो तिया सो गुप्ता उर आनि ।
बरणत कबि मतिराम है चतुराई को खानि ॥

उदाहरण – सवैया ।

लैन गई हती बागही फूल अंध्यारी लखि डर बाढ्यो तहाई । रोम उठ्या तनकम्प कुस्यो मतिराम भई श्रम को सरसाई ॥ बेलिन में उरझी अंगिया छतियां अति कांटक के छत छाई । देह में नेकु संभार रह्यो नहिं ह्यां लगि भाजि मरू करिआई॥ ६८ ॥

दोहा।

भलो नहीं यह कीवरो सजनी गेह घराम ।
बसन फटै कंटक लगै निशिदिन आठौयाम ॥

अथ बिदग्धा भेद—दोहा।

द्विबिधबिदग्धा कहतहैं कबिकरि बिमलबिवेक।
बचनबिदग्धा एक है क्रियाबिदग्धा एक ॥७०॥

अथ दुहुन के भेदलच्चणम् - दोहा।

करै बचन सों चातुरी बचन बिदग्धा मानि ।
करै क्रिया सों चातुरी क्रिया बिदग्धा जानि ॥

अथ बचन विदग्धा को उदाहरण—कबित्त।

आई है निपट सांझ गैया गई बनमांझ ह्वांते दौरि आई मेरो कह्यो कान्ह कीजिये । मैं तो हूं अकेली और दूसरो न देखियत बनकी अंध्यारी सों अधिक भय भीजिये ॥ कवि मतिराम मनमोहन सों पुनि २ राधिका कहत बात सांची ये पतीजिये। कब को हौं हेरति न हेरे हरि पावति हौं बछरा हिरानो सो हिराय नेकु दीजिये ॥ ७२ ॥

दोहा ।

खेत निहारै धान को यों बूझत मुसकाय ।
बूढ़ी हमारो है कह्यो सघन उवर दरसाय ॥७३॥

अथ क्रियाबिदग्धा उदाहरण—सवैया ।

बैठी तिया गुरुलोगनि में रति सौं अति सुन्दर रूप बिसेखी । आयो तहां मतिराम सुजान मनोभव ते अति अंत उरेखी ॥ लोचन रूप पियोई चहै अरु लाजनि जाति नहीं छबि पेखी । नैन नवाइ रही हियै माल में लाल की मूरति लाल में देखी ॥ ७४ ॥

दोहा ।

चढ़ी अटारी बाम वह कियो प्रणाम निखोट ।
तरनि किरन ते हगन की कर सरोज करि ओट ॥

अथ लक्षिता लक्षण—दोहा ।

होत लखाइ सखिन को जाको पिया सौं प्रेम ।
ताहि लक्षिता कहत हैं कबिकोबिद करिनेम ॥

उदाहरण—सवैया ।

आई हौं पायं दिवाय महावर कुंजन ते

दोहा।

मोहि मधुर मुसकानि सों सबै गावँ के छैल ।
सकल शैल वनकुंज में तरुणि सुरति की सैल ॥

अथ नष्टसंकेत अनुसयना लक्षण – दोहा ।

केलि करै जहँ कंतसों सो थल मिट्यो निहारि।
कहि अनुसयना तासु सों सोच करै बरनारि ॥

उदाहरण – कवित्त ।

आई ऋतुपावस अकास आठौ दिशनि में सोहत स्वरूप जलधरन की भीर को । मति-राम सुकबि कदम्बन की बासयुत सरस बढ़ावै रस परम समीर को ॥ भौन ते निकसि वृषभान की कुमारि देख्यो ता समै सहेट को निकुंज गिरो तीर को । नागरि के नयननि में नीरको प्रवाह बढ्यो देखत प्रवाह बढ़ो यमुना के नीर को ॥ ८३ ॥

दोहा ।

ग्रीषम ऋतु में देखि कै बन में लगी दवाँरि ।
एक अपरवस बात यह मन में जरति गवाँरि ॥

अथ भाविस्थान सन्देह अनुसयना का लक्षण—दोहा।

होनहार संकेत कौ सोच करै जो नारि ।
एहौ अनुसयना कही होइ हिये दुख भारि ॥

उदाहरण—सवैया।

बेलिन सों लपटाय रही है तमालन की अवली अति कारी। कोकिल कूक कपोतन के कुल केलि करै अति आनँदभारी॥ शोच करै जनि होहुसुखी मतिराम प्रबीण सबै नरनारी। मंजुल वंजुल कुंजन के घन पुंज सखी ससुरारि तिहारी॥ ८६ ॥

दोहा।

केलिकरैं मधुमत्त जहँ घन मधुपन के पुंज ।
सोच न कर तुव सासुरे सखी सघन बनकुंज॥

अथ तृतीया निर्दिष्टस्थले रमणगमनानुसयना
लक्षण—दोहा।

प्रीतम गये सहेट कौ जानै हेतुहि पाइ ।
एही अनुसयना कही हौं न गई पछिताइ ॥

उदाहरण—कवित्त।

सांझ के समय में मतिराम कामबश बँधी

बंसीबट तट में बजाई जादू बांसुरी। सुमिरि सहेट वृषभान की कुमारि उर दुख अधिकानो भयो सुख को बिनासु री॥ मर मों समीर लाग्यो सूल सों सहेली सब बिष सों बिनोद लाग्यो बन सों निवासुरी। ताप चढ़ि आयो तन पीर बढ़ि आयो मुख आंखिन के ऊपर उमगि आयो आंसुरी॥ ८६॥

दोहा।

झरी सपल्लव लाल कर लखि तमाल की हाल।
कुंम्हिलानी उर मालधरि फूलमाल ज्यों बाल॥

अथ मुदिता लक्षण—दोहा।

चितही सुनि जो बातको मुदित होय जोबाल।
मुदिता ताको कहत हैं कबि मतिराम रसाल॥

उदाहरण--कबित्त।

मोहन सों कुछ द्योसनि ते मतिराम बढ़ो अनुराग सुहायो। बैठीहुती तिय मायके में ससुरारि कोकाहू संदेस सुनायो॥ नाह के ब्याह की चार सुनी हिय माहिं उछाह छबीली के

छायो । पौढ़ि रही पटओढ़ि अटा दुख को मिसु के सुख बाल छिपायो ॥ ६२ ॥

दोहा ।

बिछुरत रोवत दुहन के मखि यह रूप लखै न ।
दुख अँसुआ पिय नयन हैं सुख अँसुआ तियनैन ॥

इति परकीया अथ गणिकालक्षण--दोहा ।

धन दै जाके संग में रमैं पुरुष सब कोइ ।
ग्रन्थन को मत देखि कै गणिका जानो सोइ ॥

उदाहरण -कबित्त ।

लाल कर चरण रदन छद नख लाल मोतिन की रदन रहौहै छबि छाइ कै । कबि मतिराम सुख सुबरनरूप रही रूपखानि मुसकानि शोभा सरसाइ कै ॥ आनन को इन्दु जानि आंखैं अरबिन्द मानि इन्दिरा रजनि दिन रहति सुहाइ कै । नायक नवल क्यों न देइ तन धन ऐसो सुतन को सुतन अनत धन पाइकै॥

दोहा ।

लसत गूजरी जजरी बिलसत लाल बिचार ।
हिये हजारन के हरै बेठी बाल बजार ॥ ६६ ॥

अथ अन्य नायका भेद लक्षण—दोहा ।

अन्यसुरतिदुखिता कही प्रेमगर्विता जानि ।
रूपगर्विता और पुनि मानवती उर आनि ॥

अथ अन्य संभोगदुखिता लक्षणम्—दोहा ।

निज पति रति के चिन्ह ज्यों लखै और तिय देह ।
अन्यसुरतदुखिता कहैं करै पेच सों नेह ॥६८॥

उदाहरण—कवित्त ।

याही को पठाई बड़ो काम करि आई बड़ी तेरो है बड़ाई लखैं लोचन लजीले सों । सांची क्यों न कहैं कछु मोको किधौं आपही को पाई बकसीश लाई बसन छबीले सों ॥ मतिराम सुकवि सँदेशो उनमानियतु तेरे नखसिख अंग हरष कटीले सों । छूतो है रसीलो रसबातन बनाय जानै मेरे जान आई रस राखि कै रसीले सों ॥ ६९ ॥

दोहा ।

कहत निहारी रूप यह सखी पैढ़ की खेद ।
ऊँचो लेति उसास हो कलित सकल तन स्वेद ॥

उदाहरण—यथा।

सोय रही रति अन्त रसीली अनन्द बढ़ाय अनङ्ग तरंगनि। केसरि खौरि करी तिय के तन प्रीतम और सुबास की संगनि ॥ जागि परी मतिराम सरूप गुमान जनावति भौंह के भंगनि। लाल सों बोलति नाहिन बाल सु पोंछति आंखि अंगोछति अंगनि ॥ ५ ॥

दोहा।

कैसे आऊं हौं उहां हैं जहँ नन्दकिशोर ।
दिनहूं में मुखचन्द को लखि ललचाति चकोर ॥

अथ मानवती लक्षण—दोहा।

करै ईरषा ते जु तिय मनभावन सों मान ।
मानवती तासों कहत कबि मतिराम सुजान ॥

उदाहरण—सवैया।

सो मनमोहन होत लटू मुख जाके भटू बिधु की छबि छाजै। खोलि कै नयननि देखै जो नेक तो श्याम सरोज पराजय साजै ॥ जो बिहँसि मुख सुन्दर तो मतिराम बिहान को

बारिज लाजै। बोलै अली मृदुमंजुल बोल तौ
कोकिल बोलभि को मद भाजै ॥ ८ ॥

दोहा।

सुनियत है मनमानिनो बिनअपराध रिसानि।
नेह जरावन को महा दीप ज्योति जियजानि ॥

अथ दशनायका बर्णन—दोहा।

प्रोषितपतिका खंडिता कलहन्तरिता जानि।
बिप्रलब्ध उत्कंठिता बासकसज्जा मानि ॥१०॥

दोहा।

स्वाधिनपतिका कहत हैं अभिसारिका सुनाम।
कही प्रवत्स्यतप्रेयसी आगतपतिका बाम ॥
दसौ अवस्था भेद सों दसौ नायका जानि।
तिनके लच्छण लच्छ यह नीके कहौं बखानि ॥

अथ प्रोषितपतिका लच्छण—दोहा।

जाको पीउ बिदेश में बिरहबिकल तिय होय।
प्रोषितपतिका नायका ताहि कहत सबकोय ॥

अथ मुग्धाप्रोषितपतिका उदाहरण—सवैया।

बार कितेक सहेलिन के कहे कैसेहूं लिख

न बीरी सँवारी। राखति रोकि कहै मतिराम चले अँसुवा अंखियान ते भारी॥ प्रानपियारी चल्यो जबते तबते कछु औरही रीति निहारी। पीर जनावति अंगनि में कहि पीर जनावति काहू न प्यारी॥ १९॥

दोहा।

पियबियोग तियदृग जलधि जलतरंग अधिकाय।
बरुनि मूल बेला परसि बहुर्‌यो जात बिलाय॥

अथ मध्याप्रोषितपतिका उदाहरण—कबित्त।

चन्द की उदोत होत नैन चन्दकान्त कन्त छायो परदेस देह दाहनि दहतु है। उसरि गुलाबनीर करपूर परसत बिरह की पीर हिये ज्वालनि जगतु है॥ लाजनि ते कछु न जनावे काहू सखिन सों उरको उदारि अनुरागि उमगतु है। कहा कहौं मेरी बीर उठिहि अधिक पीर सुरभि समीर सीरो तीर सो लगतु है॥

दोहा।

बहू दूबरी होत क्यों यों बूझी जब सासु।
उत्तर कह्यो न बाल मुख ऊंची लई उसासु॥

अथ प्रौढ़ा प्रोषितपतिका उदाहरण - कबित्त ।

बिरह तिहारे लाल बिकल भई है बाल नींद भूख प्यास सिगरी बिसारियतु हैं । बौरी की सी बात चन्द्रमाहूं ते छिपाइयतु बसननि तानि के बयारि बारियतु है ॥ कवि मतिराम कलाधर की सी कला कौन जीवनबिहीन मौन सी निहारियतु है । बार बार सुकुमार फूलन की माल ऐसी मार के मसूसनि मरोर मारियतु है ॥ १७ ॥

दोहा ।

चन्द्रकिरणि लगि बाल तनु उठै आगि यों जागि।
दुपहर दिनकर कर परसि ज्यों दरपन में आगि ॥

अथ परकियाप्रोषितपतिका उदाहरण – सवैया ।

ह्वांमिलि मोहन सों मतिराम सुकेलि करी अति आनंद वारी । तेई लता द्रुम देखत दुःख चले अंसुआ अंखियान ते भारी ॥ आवति हो यमुनातट को नहिं जानि परे बिछुरे गिरिधारी । जानति हौं सखि आवन चाहत कुंजन ते कढ़ि कुंजबिहारी ॥ १६ ॥

दोहा ।

लाज छुटो गेहौ छुट्यो सब सों छुट्यो सनेह ।
सखि कहियो वा निठुर सों रही छूटिबे देह ॥

अथ गणिकाप्रोषितपतिकाको उदाहरण—सवैया ।

आली सिंगाररति है छठ मौं पर लागत अङ्ग सिंगार अङ्गारो । पीरी परी तन में मतिराम चले अंखियान ते नीर पनारो ॥ सोहै नहीं मनभावन नायक आवत जो बहुतै धनवारो । बारिबिलासिनि को बिसरै न बिदेस गयो पिय प्राणपियारो ॥ २१ ॥

दोहा ।

धन के हेतु बिलासिनी रहै सँभारे बेस ।
जो तिय के हिय में बसै सो पिय बसै बिदेस ॥

अथ खंडिता लक्षण—दोहा ।

पियतन औरहि नारिके रतिके चिन्ह निहारि ।
दुखित होय सो खंडिता बरणत सुकबिबिचार ॥

अथ मुग्धाखंडिता को उदाहरण—सवैया ।

लाल तुम्हैं कहुं और तिया की लख्यो अंगिया में लगावति चोवै। ता छिन ते मतिराम

न खिलति बूझै सखीनहूं सों दुखि गोवै ॥ पानष को लिखै पानि नखै तिमि सीस नवाय कै नीचे ही जोवै । बाल नबेलि न रूसिबो जानति भीतर भौन मसूसनि रोवै ॥ २४ ॥

दोहा ।

बालसखिन की सीखती मान न जानति ठानि ।
पिय बिन आगम भौन में बैठी भौहैं तानि ॥

अथ मध्याखंडिताको उदाहरण - कबित्त ।

जावक लिलार ओठ अंजन की लीक सोहैं खैयन अलीक लोक लीकन बिसारियै । कबि मतिराम छाती नखछत जगमगे डगमगे पग सूधे मग में न धारियै । कसकैं उघारत हौं पलक पलक याते पलकामें पौढ़ि श्रम रातिको निवारियै । अटपटि बैन मुख बात न कहत बनै लटपटे पेच सिर पाग के सुधारियै ॥ २६ ॥

दोहा ।

कोऊ करै कितेकहू तजौ न टेव गोपाल ।
निसि औरन के पग परौ दिन औरनि के लाल ॥

अथ प्रौढ़ाखंडिताको उदाहरण—सवैया ।

प्रीतम आये प्रभात प्रिया मुसक्याय उठी दृग सों दृग जोरै । आगे ह्वै आदर कै मतिराम कहै मृदुबैन सुधारस बोरै ॥ ऐसी सयान सुभायनहीं सौं मिली मनभावन सों मन मोरै । मान गो जान सुजान तबै अँगिया की तनी न छुटी जब छोरै ॥ २८ ॥

दोहा ।

आदर दै पियसों मिली तियहिय राखि सयान ।
दृढ़ गहि बांधी कंचुकी समझायो मन मान ॥

अथ परकीयाखंडिताको उदाहरण—सवैया ।

रावरे नेह को लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसरायो । डारदयो गुरु लोगन को डर गांव चवाई में नाम धरायो ॥ हेतु कियो हम जैतो कहा तुम तो मतिराम सबै बिसरायो । कोउ कितेक उपाय करो कहुं होत है आपने पीउ परायो ॥ ३० ॥

दोहा ।

हमसों तुमसों लाल इत नयननही को नेह ।
उतप्यारी के दृगन के सलिल सींचियत देह ॥

अथ गणिकाखण्डिताको उदाहरण—सवैया।

ह्यां हमसों मिलिबो ठहराय कै नैन कहूं अनतेही करीजे। भोरही आय बनाय कै बातन चातुर ह्वै बिनती वह कीजे॥ ऐसिये रीति सदा मतिराम सों कैसे पियारे जू प्रेम पतीजे। सौंह न खाइये जाइये ह्यांते न मानिहौं तौहूं जो लाखन दीजै॥ ३२॥

दोहा।

कन्त कहा सौंहन करो जानि पस्यो अब नेह।
देन कह्यो सो बिन दिये जान न पैहो गेह॥३३॥

अथ कलहंतरिताको लक्षण—दोहा।

कह्यो न मानै कन्त को पुनि पाछे पछिताइ।
कलहन्तरिता नायका ताहि कहत कबिराइ॥

अथ मुग्धाकलहन्तरिताको उदाहरण—सवैया।

गौने कि चूनरी बैसिय है दुलही अबहीं ते ढिठाई बगारी। वेऊ मनावन आये हैं आपने हाथन जात हैं पाग सँवारी॥ पांय परे मतिराम लला अनुहारी करी कर जोरि हँहारी।

आपुहि मान्यो मनायो न काहू को आपुहि खात न पान पियारी ॥ ३५ ॥

दोहा।

आई गौने काल्हिही सीखि कहाँ सयान ।
अबहीं ते रूसन लगी अबहीं ते पछितान॥३६॥

अथ मध्याकलहन्तरिता को उदाहरण—सवैया ।

पांयन आय परे तो परे रहैं केती करै मनुहारि सहेली । मान्यो मनायो न मैं मति-राम गुमान में ऐसी भई अलबेली ॥ प्यारे गयौ दुख मानि कहीं अब कैसि रहौं यहि राति अ-केली । आजु तौ ल्याउ मनाइ कन्हाई को मेरो न लीजियो नांउ सहेली ॥ ३७ ॥

दोहा।

जो तू कहै तो राधिके पियहि मनावन जाउँ ।
उहां कहौंगी जाय कै सखी तिहारी नाउँ॥३८॥

अथ प्रौढ़ाकलहन्तरिता को उदाहरण—सवैया ।

ठाढ़े भये कर जोरि कै आगे अधीन ह्वै पांयन सीस नवायो। केतीं करी बिनती मति-

राम पै मैं न कियो हठतै मन भायो ॥ देखतही सिगरी सजनी तुम मेरे तो मान महामद छायो। रूठि गयो उठि प्राणपियारो कहा कहिये तुमहूं न मनायो ॥ ३९ ॥

दोहा ।

प्रीतम जब पांयन पर्यो तब अति भई सरोष ।
कह्यो न मान्यो आपुही हमैं दीजियतु दोष ॥

अथ परकीयाकलहन्तरिता को उदाहरण—सवैया ।

जाकि लिये गृह काज तज्यो न सिखी सखियान की सीख सिखाई। बैर कियो सिगरे ब्रज गांव मों जाकि लिये कुलकानि गँवाई ॥ जाकि लिये घर बाहरहू मतिराम रह्यो हँसि लोग चवाई । ता हरि सों हित एकहि बार गँवारि मैं तोरत बार न लाई ॥ ४१ ॥

दोहा ।

जोरत हूं सजनी बिपति तोरत तपत समाज ।
नेह कियो बिनकाजही तेहि कियो बिनकाज ॥

अथ गणिकाकलहन्तरिताकी उदाहरण—सवैया ।

जाते लही जगबीच बड़ाई मैं मेरे बियोग

जो होत है छीनो। मोहिं गने मतिराम जो प्राण सो मेरे सदाहि रह्यो जो अधीनो॥ मेरे लिये नितही उठि कै गहनो जु गढ़ाय कै ल्यावै नवी-नो। प्राणपियारो सो पायँन लाग्यो री मैं हँसि कंठ लगाय न लीनो॥ ४३॥

दोहा।

जासों कियो सनेह मन रही न एकौ साध।
तासों भई सरोष हौं सजनी बिन अपराध॥४४॥

अथ बिप्रलब्धाको लच्चण—दोहा।

आप जाय संकेत में मिलै न जाको पीय।
ताहि बिप्रलब्धा कहत सोच करत अति जीय॥

अथ मुग्धाबिप्रलब्धाको उदाहरण—सवैया।

आलिन कै सुख मानिबे को पियप्यारे कि प्रीति गई चलि बागै। छाय रह्यो हियरो दुख सौं जब देख्यो नहीं नंदलाल सभागै॥ काहू सौं बोल कछू न कहै मतिराम न चित्त कहूं अनु-रागै। खेलत खेल सहेलिन में पर खेल नवेलि को सेल सों लागै॥ ४६॥

दोहा।

लख्यो न कन्त सहेट में लख्यो नखत को राय।
नवल बाल को कमल सों गयो बदन कुंभिलाय॥

अथ मध्याबिप्रलब्धा को उदाहरण—सवैया।

केलि के मन्दिर देख्यो न लाल को बाल के दाहन अंग दहे हैं। भौंह चढ़ाय सखी सो लख्यो मतिराम कछू न कुबोल कहे हौं॥ भूलि हुलास बिलास गये दुख ते भरिकै अँसुवा उमहे हैं। ईछन छोरनि ते न गिरे मनो तीछन कोरनि छेदि रहे हैं॥ ४८॥

दोहा।

तियको मिल्यो न प्राणपति सजल जलद तनमैन।
सजल जलद लखिकै भये सजल जलद से नैन॥

अथ प्रौढ़ाबिप्रलब्धाको उदाहरण—कबित्त।

सांझही सिंगार साजि संग लै सहेलिन को सुन्दरि मिलनि चली आनँद के कन्द को। कबि मतिराम बाल करति मनोरथनि पेख्यौ परयंक मै न प्यारे नँदनन्द को॥ नेह ते लगी

है देह दारुण गहन गेह बाग के बिलोक द्रुम बेलिन के वृन्द को। चन्द को हँसत तब आयो मुखचन्द अब चन्द लाग्यो हंसनि तिया के मुखचन्द को ॥ ५० ॥

दोहा।

लख्यो न मन्दिर केलि के पियरुचि विजित अनंग
नयन करन ते जल बलय गिरे एकही संग ॥

अथ परकीया विप्रलब्धा को उदाहरण—कवित्त।

चली मतिराम प्राणप्यारे को मिलन घात नेसुक निहारि के बिगारि काज घर को। पियरे बदन दुख हियरे समाइ रह्यो कुञ्जन में भयो न मिलाप गिरधर को ॥ बिसरे बिलास वैबिलास गयो हांस छायो सुन्दरि के तन में प्रताप पञ्चशर को। तीछन जुन्हाई भई ग्रीषम की घाम, भयो भीषम पियूष भानु भानु दुपहर को ॥

दोहा।

तची जोन्हि सों भूमि अति भरें कुञ्ज के फूल।
तुम बिन वाको बन भयो खड्गपत्र के तूल ॥

साहस करि कुञ्जन गई लख्यो न नन्दकिशोर।
दीपसिखा सी थरहरी लगें बयार झकोर ॥५४॥

अथ गणिका विप्रलब्धा को उदाहरण—सवैया।

बारि बिलासनि कोटि हुलास बढ़ाइ कै अंग सिंगार बनायो। प्रीतम गेह गई चलि कै मतिराम तहां न मिल्यो मनभायो॥ संग सहेली सों रोष कियो नहिं आपुन को यह दोष लगायों। हाय कियो मैं मती यह कौन जो आपने भौन न बोलि पठायो ॥ ५५ ॥

दोहा।

मोहि पठाई कुंज में उत आयो नहिं आप।
आली औरहु मोत को मेरो मिल्यो मिलाप ॥

अथ उत्का को लक्षण—दोहा।

आपु जाय संकेत में पीउ न आयो होय।
ताको मन चिन्ता करै उत्का कहिये सोय॥५७॥

अथ मुग्धा उत्का को उदाहरण—सवैया।

बीति गई जुग जाम निसा मतिराम मिटा तम की सरसाई। जानति हौं कहुं और तिया

सों रह्यो रस के रस सों रसकाई ॥ सोचति सेज परी यों नवेली सहेली सों जाति न बात सुनाई । चन्द चढ्यो उदयाचल पैं मुखचन्द पैं आनि चढ़ी पियराई ॥ ५८ ॥

दोहा ।

क्यों न कन्त आयो अली लाजन बूझि सकै न ।
नवल बाल पलका परी पलक न लागै नैन॥५९॥

अथ मध्या उत्का को उदाहरण—सवैया ।

बारहिं बार बिलोकति द्वारहिं चौंकि परै तिनके खरकेहूं । सेज परी मतिराम बिसूरति आई अली अबहीं लखि मैंहूं ॥ संग सखान के खेलत हौ अजहूं रजनीपति के अथयेहूं । लालन बेगि न जाहु घरै पुनि बाल न मानिहै पांय परेहूं । ६० ॥

दोहा ।

कहा रह्यो आयो सखी पीउ पहर युग मैन ।
सुध निकरै अधरानि सों बाल बदन ते बैन ॥

अथ उत्का प्रौढ़ा को उदाहरण—सवैया।

कैधौं घरी निसि बीति गई अरु मेह चहूं दिसि आयो उनैहै। अंग सिंगार सिँगार कै सांवरे रावरी बाट बिलोकति ह्वैहै॥ बैठे कहा मतिराम रसाल हौ राति मनावतिही पुनि जैहै। जाहु न बेगि पियारौ तिहारी सु दोष बिहारी हमैं पुनि दैहै॥ ६२॥

दोहा।

पीउ न आयो ध्यान कों मूंदे लोचन बाल।
पलक उघारी पलक में आयो होय न लाल॥

अथ परकीया उत्का को उदाहरण—कबित्त।

जमुना के तीर बहै सीतल समीर जहां मधुकर मधुर करत मन्द शोर हैं। कवि मतिराम तहां छवि सों छबीली बैठी अंगनि ते फैलत सुगन्ध की झकोर हैं॥ प्रीतम बिहारी के निहारिबे को बाट ऐसी चहूंओर दीरघ द्दगन करी दौर हैं। एक ओर मीन मनो एक ओर कंज पुंज एक ओर खंजन चकोर एक ओर हैं॥

दोहा ।

कन्त बाट लखि गेह की कुंज देहरी आय ।
ऐहैं पीउ बिचारि यों नारि फेर फिरि जाय ॥

अथ गणिकाउत्का को उदाहरण—सवैया ।

प्रीतम की धर ध्यान घरीक करै मनहीं मन काम कलोलै । पातहु के खरकें मतिराम अचानकहीं अंखिया पुनि खोलै ॥ प्रीतम ऐहैं अजौं सजनी अंगिराइ जम्हाइ घरीकु यों बोलै । गावै घरीकु हरेही हरे हरि गेह के बागहरे हरे डोलै ॥ ६६ ॥

दोहा ।

बारबधू पियपन्थ लखि अँगिरानी अंग मोरि ।
पौढ़ि रही परयंक मनु डारो मदन मरोरि ॥

अथ बासकशज्जा को लक्षण – दोहा ।

ऐहैं प्रीतम आजु यों निश्चय जानै बाम ।
साजि सेज सिंगार सखि बासकशज्जा नाम ॥

अथ मुग्धाबासकशय्या को उदाहरण – कबित्त ।

भई हौ सयानी तरुनाई सरसानी प्रीति रीति

में पत्यानी उर लाज डर नाखियो । कबि मतिराम कामकेलि की कलानि करि मोहन लला को बस कीजो अभिलाषियो ॥ मृदु मुसक्याइ परयंक में निसंक जाइ अंक भरि आनंद अधर रस चाखियो । नेवरै कि तनक झनक राखि प्यारी आजु रसनाकी तनक झनक रस राखियो ॥ ६८ ॥

दोहा ।

दीठि बंचाइ सखीन की केलि भवन में जाइ ।
पौढ़ि रही छिन सेज तिय अतिअनंद अधिकाइ॥

अथ मध्यावासकशय्या को उदाहरण – कबित्त ।

केसरि कनक कहा चंपक बरण कहा दामिनी यों दुरि जात देह की दमक तें । कबि मतिराम लोने लोचन लपट लाज अरुण कपोल काम तेज की तमक तें ॥ पग के धरत कल किंकिनी नेवर बजें बिछिया झमक उठें एकही झमक तें । नाह मुख चाहि चिते चौंचक हंसति चौंकि परे चन्दमुखी निज चौका की चमक तें ॥ ७१ ॥

दोहा।

निसि नियरानि निहारियत सौति बदनअरबिन्दु।
सखी एक यह देखिये तेरो आनन इन्दु ॥७२॥

अथ प्रौढ़ावासकशय्याको उदाहरण – सवैया ।

बारन धूपि अंगारन धूपि कै धूप अंध्यारी पसारी महा है । आनन चन्द समान उग्यो मृदु मन्द हँसी जनु जोन्ह छटा है॥ फैलि रही मतिराम जहां तहँ दीप सुतारन की परभा है । लाल तिहारे मिलाप को बाल सु आजु करी दिनही में निसा है ॥ ७३ ॥

दोहा।

सब सिँगार सुन्दरि सजी बैठी सेज बिछाय ।
भयो द्रौपदी को बसन बासर नहीं बिताय ॥

अथ परकीया बासकशय्याको उदाहरण--सवैया।

सांझहि ते करि राखे सबै करिबे को जु काज हुते रजनी के । पौढ़ि रही उमगी अति ही मतिराम अनन्द अमात न हीके॥ सोवत जानि कै लोग सबै अधिकाने बिलास मनोरथ

नीके। सेज ते बाल उठी हरये हरये पट खोलि दिये खिरकी कैं॥ ७५॥

दोहा।

मनमोहन के मिलन को करै मनोरथ नारि।
धरे पौन के सामुहें दिया भवन को बारि॥७६॥

अथ गणिकावासकशय्या को उदाहरण—कवित्त।

सितसारी सोहत उज्यारी मुखचन्द की सी महल निमन्द मुसक्यान की महामही। अँगिया के ऊपर ह्वै उलही उरोज ओप उर मतिराम माल मालती डहा डही॥ मांजे मंजु मुकुर से मंजुल कपोल गोल गोरी की गोराई गोरे गातन गहा गही। फूलन की सेज बैठी दीपति फैलाय लाइ बेलि को फुलेल फूली फूल सी लहालही॥ ७७॥

दोहा।

सुन्दरि सेज सँवारि कै साजे सबै सिंगार।
दृग कमलन के द्वार में बांधे बन्दनवार॥७८॥

अथ स्वाधीनपतिकाको उदाहरण—दोहा।

सदा रूप गुण रीझि पिय जाके रहै अधीन ।
स्वाधिनपतिका नायका बरणैं कबि परबीन ॥

अथ मुग्धा स्वाधीनपतिका को उदाहरण – सवैया।

आपनि हाथ सों देत महावर आपुहि बार सिंगारत नीके । आपुनहीं पहिरावत आनि कै हार सँवारि कै मौलसरी के ॥ हौं सखि लाजन जात गड़ी मतिराम सुभाव कहा कहौं पीके । लोग मिलै घर घेरे कहैं अबहीं ते ये चेरे भये दुलही के ॥ ८० ॥

दोहा।

अंग अंग अवलोकि कै तिय जोबन की जोति।
सुधासिन्धु अवगाहयुत दीठि नाह की होति ॥

अथ मध्या स्वाधीनपतिका को उदाहरण – कबित्त।

जगमग जोबन अनूप तेरो रूप चाहि रति ऐसी रम्भा मी रमासी बिसराइये । देखिबेको प्राणप्यारी पास खरो प्राणप्यारो घूंघुट उघारि नेकु बदन दिखाइये ॥ तेरे अंग अंग में मिठाई

औ लुनाई भरी मतिराम कहत प्रकट यह पाइये । नायक के नैनन में नाइये सुधासो सब सौति नके लोचनन लोन सो लगाइये ॥८२॥

दोहा ।

बड़े आपने दृगन को तुम कहि मकौ सु मैन ।
पिय नयनन भीतर सदा बसत तिहारे नैन॥८३॥

अथ प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका को उदाहरण – सवैया ।

लालन में रतिनायक ते सुख सुन्दरता रुचि पुंजनि पेखी । बालमै त्यौं मतिराम कहैं रति ते अति रूप कला अवरेखी ॥ सासुहै बैठे लखैं इक सज में बोली अली सुख प्रीति बिसेखी । भाल में तेरे लिखी बिधि सो यह लाल की मूरति लाल में देखी ॥ ८४ ॥

दोहा ।

सुधा मधुर तेरो अधर सुंदर सुमन सुगंध ।
पीव जीव को बंधु है बंधु जीव को बंध ॥८५॥

अथ परकीयास्वाधीनपतिका को उदाहरण – सवैया ।

मो युग नैन चकोरन को यह रावरो रूप·

सुधाही को नैबो । कीजै कहा कुलकानि ते आनि पर्यो अब आपनो प्रेम छिपैबो ॥ कुंजन में मतिराम कहूं निसि द्योसहूं घात परे मिलि जैबो । लाल सयानी अलीनि के बीच निवारिये च्यों की गलीन को ऐबो ॥ ८६ ॥

दोहा ।

विषम लोग ब्रजगांव के लाल बिलोको बास ।
बढ़ि जैहै इन दृगन के हांसनि ते उपहांस॥८७॥

अथ गणिका स्वाधीनपतिका को उदाहरण—सवैया ।

भूषण अम्बर ल्यावत आपु रहैं पहिरावन को मुख हेरे । आपही पान खवावति आनि सहेली न आवन पावत नेरे ॥ ता पिय सों रिस कैसे करौं मतिराम कहै सिखये सखि तेरे । पूरि रहे मनभावन के गुण मान को ठौर नहीं मन मेरे ॥ ८८ ॥

दोहा ।

मोहिं लखि सजनी सदा जाको धन मन प्राण ।
सपनेहूं ता पीव सों मान न भलो सयान ॥८९॥

अथ अभिसारिका को लक्षण—दोहा।

पियहि बुलावै आप कै पिय पै आपुहि जाय।
ताहि कहत अभिसारिका जे प्रवीण कविराय॥

अथ मुग्धा अभिसारिका को उदाहरण - सवैया।

बातन जाय लगाय लई रसही रस में मन हाथ कै लीनो। लाल तिहारे बुलावन को मतिराम मैं बोल कह्यो परबीनो॥ बेगि चलो न बिलम्ब करो, लखो बाल नवेली को नेह नबीनो। लाज भरी अँखियां बिहँसी बलि बोल कहे बिन उत्तर दीनो॥ ९१॥

दोहा।

अली चली नवलाहि लै पिय पै साज सिंगार।
ज्यों मतङ्ग अड़दार को लिये जात गडदार॥

अथ मध्याअभिसारिका को उदाहरण—सवैया।

बैठि रहे मतिराम लला घर भीतर सांझहि ते अनुरागी। बानक सों बनि चारु सिंगारनि आई सुहागिनि प्रेम सों पागी॥ प्यारे कह्यो हँसि आइये सेजहिं प्यारी की जोति बिलासिनि

जागी । नैन नवाइ रही मुसक्याय के हार हिये को सँवारन लागी ॥ ९३ ॥

दोहा ।

जोवनमद गजमन्दगति चली बाल पतिगेह ।
पगनि लाज सांकर परी चढ़ी महावत नेह ॥

अथ प्रौढ़ा अभिसारिका को उदाहरण—कवित्त ।

सहज सुबासयुत देह की दुगुनि दुति दामिनि दमक दीप केसरि कनक तें । मतिराम सुकवि सिरीष सुकुमार अंग सोहत सिंगार चारु जोबन बनक तें ॥ सोइबे को सेज चली प्रानपति प्यारे पास जगति जुन्हाई जोति हसनि तनक तें । चढ़त अटारी गुरलोगनि की लाज प्यारो रसना दसन दाबै रसना भनक तें ॥

दोहा ।

सज सिंगार सेजहि चली बाल जहां पतिप्रान ।
चढ़त अटारी की सिढ़ो भई कोस परिमान ॥

अथ परकीया स्यामा अभिसारिका लच्छण—यथा ।

उमड़ि घुमड़ि दिगमंडलनि मण्ड रहे

भूमि २ बादर कुहू की निसि कारी मै । अंगनि मै कीने अंगराग मृगमद तैसो, आनन ओढ़ाइ लीनी स्यामरंग सारी मै ॥ मतिराम सुकवि मेंचक रुचि राजि रही आभरन राजी मरकत मनिवारी मै । मोहन छबीले को मिलन चली ऐसी छबि छांह लौं छबीली छवि छाजत अंध्यारी मै ॥ ६७ ॥

दोहा।

स्याम बसन मै स्याम निसि दुरी न तियकी देह।
पहुंचाई चहुंओर मिलि भौंर भीर पियगेह ॥

अथ चन्द्रिका अभिसारिका लक्षण—कवित्त ।

अंगनि चन्दन घनसार अंगरात सेत सारी छीर फेन कैसी आभा उफ़नात है । राजत रुचिर रुचि मोतिन के आभरन कुसुम कलित केस सोभा सरसात है ॥ कबि मतिराम प्रानप्यारे को मिलन चली करि कै मनोरथनि मृदु मुसुकात है। होति न लखाई निसि चन्द की उँज्यारी मुखचन्द की उँज्यारी तन छाहो छपि जात है ॥ ६८ ॥